<u>पवित्रता मास</u>

मन मेरा सुमन – 4

22.09.2017

1. **<u>स्वमान</u> –** मैं परमपवित्र फरिश्ता हूँ।

- मैं फरिश्ता पवित्र धर्म की स्थापना के लिये बाबा के साथ इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ...कलयुग की अपवित्रता मुझे छू नहीं सकती...मुझे विश्व की सर्व आत्माओं को पवित्रता का दान देना है...।

2. **<u>योगाभ्यास</u> –**

अ. मेरा सम्पूर्ण पवित्र फरिश्ता स्वरुप मेरे सामने खड़ा है...उससे चारों ओर लाइट तथा माइट फैल रही है...धीरे-धीरे चलते हुए वो मेरे समीप आता है और मुझमें समा जाता है...।

ब. मैं पवित्रता का फरिश्ता अंतरिक्ष में स्थित होकर सारे संसार से अपवित्रता का अंधकार दूर कर रहा हूँ...सभी आत्माएँ पवित्र होती जा रही हैं...।

स. सम्पूर्ण फरिश्ता ब्रह्मा बाबा बाहें पसारे मुझे वतन में बुला रहे हैं...मैं परम पवित्र फरिश्ता वतन में पहुँच जाता हूँ...बाबा अपनी पावन दृष्टि से मुझे निहाल कर रहे हैं...प्रकृति के पाँचों तत्वों को देव रुप में बाबा वहाँ इमर्ज करते हैं और बाबा के साथ मैं उन्हें पवित्र प्रकम्पन देकर पावन कर रहा हूँ...पश्चात् बाबा मुझे वतन की सैर करा रहे हैं...।

3. **<u>धारणा</u> – सम्पूर्ण निर्विकारी**

- एक बाबा के अलावा और किसी की भी याद न हो।

4. **<u>चिंतन</u> –** सम्पूर्ण निर्विकारी आत्मा की निशानियाँ क्या होंगी ? एक शब्दचित्र बनायें।

जैसे - व्यर्थ से मुक्त

- देह, देह के संबंधों व देह के पदार्थों के आकर्षण से मुक्त
- ईर्ष्या, घृणा, वैर व नफरत की भावनाओं से मुक्त...आदि।

5. **<u>स्वराज्याधिकारियों प्रति</u> –**

अ. अगर सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा में थोड़ा संघर्ष हो रहा हो तो भी आशा न छोड़ें। हम ही वह हैं जिन्होंने हर कल्प में विकारों पर विजय पाया है। अब भी हम ही विजयी होंगे। भगवान के आशीर्वाद का हाथ हमारे सिर पर है।

ब. हे जितेन्द्र ! सिर्फ चंद मिनटों के ईन्द्रिय सुख के पीछे तुम अपने 21 जन्मों के सुख-शांति का राज्य क्यों गँवाना चाहते हो ? सतयुगी सुख के सामने यह तो सिर्फ काग-विष्ठा समान है। याद रखो, तुम्हारे 5 मिनिट की कामांधता तुम्हारे पूरे 5000 वर्ष को अंधकारमय बना सकती है।